

1=> यज्ञार्थी मूर्ती राहिए ही राहिए - रक्षा धार करवा
करें?

उत्तर=> मूर्ती राहिए पात्र यज्ञार्थी मूर्ति ही हिए गौहमणी
राहिए पात्र हैं। यज्ञार्थी मूर्तिमात्र ही उदार
मरघ - मांसा मते माकडडाहाली धकाउहे - हिए ही
हिए धाही ते मरिग हेटे हिये हैं। मरगत
मरिग नां बहिया ही राउ दबीरी हिए गी
येंदा हिये हैं हिए राउत यज्ञार्थी मूर्ती
राहिए ही यज्ञार्थी मूर्ति ही धरुत मरिग
हेटे हैं।

मूर्तीहार ही उहे हिएमाम उं उसागर
उही हैं। "युः गुरुहो मिय "मरुमार, :-

"मूर्तीहार मरुची हिएमामी परम - मरुडी
हे हियेगम हा हिए मरुतपुवत उग हैं।"

मरुसा मूर्तीहार उम मरुः ही दुर ही दुर
हिये मिये मरु हियेरी वरुता बीडी गधी।
हिये ही वरुतावर हमार मापहे परम मरुते
ममात्रिव मधीयां ते हरमा वे गी मापही
करु ही उमाही बीडी तांरी हैं।

"मूर्ती" मरुत करधी उमा हा मरुत हैं।
हिये मरुत "मरु" उं निवक्रिया उं मिय हा
मरुत हैं "बासा बंधन"। "यज्ञार्थी हियेमामी दबीर
मरुते हरहेस बासी उं हे बंधन परिकर मरु हिये
उरुता ही पारमिक माहगी हा चिंतु मी। हिये
ते उं हिये हाक्रिया हा का मूर्ती ये गिमा।"
"मूर्ती" मरुत ही उंउपडी उं मरुतां मधीयां
हियेहातां ते मरुतां हियेहात पुगताए उं उं उं
हियेहात ते हिये पुंउडा बीडी उं वि उंमरे
हियेहात पुमात्रिव उं।

६. मूढी मूढत 'मूढ' (Suff) उं किमा गिमा उं
 हिमरी यमती मूढत (Suff) 'यमती' यम
 उं ही उं नाही उं, निमरा उाह उं 'उं *
 उं धमउर पारतु वरत हाफा । मूढत ममिमा
 उं उं उं उं उं माहे नीहक कउते पहिउकडा
 हा किनु ममके नाहे उं ।

⇒ ग। मरिहरीधर मंगरेनी दिहहातु घुगुतु कउते निरुमक
 उं दिहगं हा उहाफा दिहे किहरे उं,

“ मूढी मूढत जुकादी मूढत 'मूढेमा'
 दिहे निरुमका उं, निमरा कउष (Suffhos)
 मूढी उं उं निम ही घंघी पुरातिउ उं
 उं उं उं । ”

⇒ अही रात मिय नाउा कउमार,

“ मूढी मूढत जुकादी हे 'मूढीमा' मूढत
 उं निरुमका उं, निम हा कउष
 गिमातु घंघ कउषाउ गिमातु पुापड
 उं उं । ”

उिउ उं दिहहा ही मूढी मूढते कउेरां कउष वीउे
 गहे उं, यर दिहे ममका यंजधी मूढी वदि वडा
 उं दिहकर हा उं ।

मरिह हां उं उं मूढिह उं उं । मूढी - मूढी
 मरी दिहने मूढी मायव ममरिह उं उं
 उिमाग वं उं उं उं उं उं उं उं उं उं
 दिहकर दिह कउमका उं उं उं उं उं उं उं उं
 मूढी मायवा उं उं उं उं उं उं उं उं उं उं

ਉੱਚਾ ਦੀ ਮਾਨਸਿਰਤਾ ਉੱਚੇ ਰੱਖੀ ਤੇਕਰਾ ਮੈਂਦਰ
 ਮਮਾਇਕਾ ਤੇਇਕਾ ਮੀ ਜੇ ਇਸੇ ਵਾਕਤ ਸੁਦੀ
 ਮਾਧਵਾਂ ਨੇ ਤਿਆਗਦਾਰੀ ਜੇ ਕੇ ਜੀਵਕੁ ਧਮਰ
 ਕਰਨਾ ਸਰੂ ਕੁਰ ਇੱਤਾ ਮੀ। ਸੁਦੀਦਾਰ ਦੇ
 ਵਿਕਾਸ ਵਿੱਚ ਰੱਜਮਦਾਰੀ ਭਾਵਕੁ ਲਾ ਵੀ, ਬਹੁਤ ਯੋਗਦਾਨ
 ਜੇ। ਕਮਰੋਈ ਮਰੀ ਦੇ ਕੰਤ ਕਮਤੇ ਕੋਈ ਮਈ
 ਦੇ ਕਾਰੰਤ ਵਿਚਕੇ ਸੁਦੀ ਮਾਧਵ ਰੱਜਮਦਾਰੀ
 ਭਾਵਕੁ ਤੀਤ ਖਲਾ ਦੀ ਧੰਗੀ ਵਿੱਚ ਖੀਰ
 ਮਰ।

⇒ ਡਾ. ਤਾਗ ਚੰਦ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ,

"ਸੁਦੀਦਾਰ ਮਰਮੁੱਠ ਇੱਕ ਤੀਬਰ ਤਗਤੀ
 ਵਾਕਾ ਕਤ ਹੈ। ਇਸਕ ਸਿਮ ਲਾ
 ਵਲਵਲਾ ਕਵਿਤਾ, ਸੰਗੀਤ ਤੇ
 ਕਾਚ ਇਸ ਦੀ ਉਪਾਯਕਾ ਕਮਤੇ
 ਕੱਥ ਕਾਚ ਕਮਤੇਤਾ ਇਸ ਲਾ
 ਕਮਾਰਕਮ ਹੈ।"

ਸੁਦੀ ਕਾਵਿ ਸੁਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਉੱਚੇ ਕਮਧਾਇਤ ਕਾਵਿ-ਪਥਾ
 ਜੋ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਸੁਦੀ ਕਾਵਿ
 ਧਾਰਾ ਇਕ ਕਮੀਰ ਤੇ ਮੋਰਵਸਾਜ਼ੀ ਕਾਵਿ-ਧਾਰਾ
 ਕਮੇਂ ਕਮਾਧਈ ਵਿਕੱਥਣ ਪਛਾਣ ਦੀ ਮਾਯਕ ਹੈ।
 ਇਕੀਕਾ ਮਈਕਾ ਤੇ ਧਾਮਦ ਦੀ ਸੁਦੀ ਕਾਵਿ
 ਉੱਚੀ ਮਾਰਥਰਤਾ ਲਾ ਕੱਥਲਾਰ ਹੈ ਜੋ ਇਸ ਦੇ
 ਕਮੇਂ ਕਾਚ ਕਮੇਂ ਇਸ ਕੁ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੈ। ਕੇ
 ਕਿਰਮਕੋਥ ਕਾਚ ਕਮਦੇ ਗੰ ਕਿ ਸੁਦੀ ਕਾਵਿ
 ਕਮਮਰ 'ਕਾਵਿ' ਹੈ।

डा. मंडेर मिथ कमलमार

"वाहिए नुं एके रमनदी घाही
आधिका सांदा हैं। एमि हिए
गिमान के मनेउह घंपी उ
उरपका, कवध उ घिंध काफ-काफ
मंगरिउ रहे मिफरे उत।"

एमि उतुं वाहिए मुग्त एी डिपती बगडिह हाही उफा
हैं। एि पाठर के मुग्त-आनेह के काफ-काफ उमरे
गिमान नुं हिमाफ एी बररी हैं। वाहिए सामउरीआ
नुं वाहिए हें उउ मने उत, सिधें : उह,
हिमाव, उरपका, वाहिए-रम, कवधोव, पुउर,
घिंध, वाहिए-मैत्री, हरे कउ मंगीउ आहिए घाघा
मधु, हरीर उं घामह माग गुमैर, मजडाव घाव,
धरु माग, कत्री उरु, गमम माग, गजाम
हरीर आहिए-मुदी बहीमा के थंसाही मुदी
वाहिए हिए आधरी-आधरी उरका काफ जेगलरु
पाहिका।

दिकमाएीवडेपीडीमा आठ घुटेनिका कमलमार

"पुउर एके अजिगी मैरिउ हसु नुं
वाहिए उत जिउसी बिम हसु एी
ममानउा नुं मने हिए घिंध-उध
हिए मंगरिउ का कवधे बंरु मधेप
उहका उं निरउर कतुउती हें लभावा
धम मीती सांदा हैं।"

ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤਾ ਹੈ।

⇒ ਡਾ. ਨਗੇਂਦਰ ਆਨੰਦ,

“ਕਾਇ - ਬਿੰਬ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ
ਵਧੂ ਪ੍ਰਮਾਣ ਦੁਆਰਾ ਨਿਰਮਿਤ ਇਕ ਅਜਿਹੀ
ਮਾਨਸ ਕ੍ਰਿਤੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਦੇ ਮੁੱਢ ਇਕ
ਕੁਝ ਹੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।”

2. ਬਿੰਬ :-

ਅਨੁਭਵ ਕੀਤੇ ਗਏ ਇੰਦਰੀ ਖੇਪ ਨੂੰ ਵਧੀ ਜਦੋਂ ਸ਼ਬਦਾਂ
ਦੁਆਰਾ ਚਿੱਤਰਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇੰਨਾਂ ਸ਼ਬਦ-
ਚਿੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਕਾਇ - ਬਿੰਬ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਾਇ ਇੱਕ
ਬਿੰਬਾਂ ਦਾ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਸੁੱਝਦਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਬਿੰਬ ਕੀਤਾ
ਦਾ ਉਹ ਕੰਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਕੁਝ ਤੋਂ ਸੁੱਝ
ਕੇ ਸੋਝੀ ਤੌਰ ਅਤੇ ਵਸਤੂ ਤੋਂ ਸੁੱਝ ਕੇ ਰੂਪ ਤੌਰ
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਸੂਫੀ ਕਵੀਆਂ ਨੇ
ਆਪਣੀਆਂ ਕਾਇ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਇਸ ਬਿੰਬ
ਰਸ - ਬਿੰਬ, ਸਪਰਸ਼ - ਬਿੰਬ, ਗੰਧ - ਬਿੰਬ, ਠਾਠ ਬਿੰਬ
ਆਦਿ ਵਰਤ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਸੂਫੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਗਿਆਨ
ਇੰਦਰੀਆਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
ਕਰਕੇ ਸਾਰੇ ਹੀ ਬਿੰਬਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਆਪਣੀਆਂ
ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਕਾਇਆਂ ਵਿੱਚ - ਰੁਹ ਗੀਤਾਂ,
ਪਹਿਰਾਵੇ, ਖਾਣ - ਪੀਣ, ਕੰਮ ਪੌਰੇ ਆਦਿ ਨਾਲ
ਸੰਬੰਧਿਤ ਬਿੰਬਾਵਲੀ ਹੀ ਵਰਤੋਂ ਮਿਲਦੀ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ
ਖਾਣ ਪੀਣ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਬਿੰਬ :

ਆਖ ਖਾਣੀ ਤੋਂ ਰੁੱਪ ਮਜ਼ੀਦਾ, ਸਾਗਾਂ ਨੂੰ
ਟੱਕਰ ਖੋਗ।
ਕੁੱਝ ਕੁੱਝੋਂ ਫਰੀਬ ਮਾਈ ਦਾ, ਮਰ ਜਾਣ ਤੇ ਮਾਣਾ ਰੋਗ।

3.

उम :-

उरडी वाहि हिउ उम नै धरुत मउडे
 हिउ गिमा नै । उम नै 'वाहि' एी आउमा
 मनुमा जाला नै । पसौधी मुढी वाहि उरकां
 वाहिर गहां एे ताम-ताम उममएी नै मुढी
 वहीमां एमाग हँध धरताहां अडे हँध-हँध
 मघिडीमां अकुमार मिगाव उम, गम उम, उर
 अडे मांड उम एी हुवहीं हउते बीडी नै । हँध
 अडे मघडाक धारु एीमां मीगरीमां हिउ उरडी
 वाहि मामउर हँधे निरपारिउ नै एे नै उमां
 एी हुवहीं हउते बीडी गएी नै ।

(i)

मिगाव उम :-

धारु नै पस गिमाक हिउगीमां, पस
 उंठां, पसां हिसे हिवागं अडे पस पांठां एी उरावर
 एे बे धरु मिलाप एी पसी नै धरे सुधमउत मीएन
 हिउ पस बीडा नै, नै मिगाव उम एे मँपगे नै
 पँध उं उँउम नमुका नै :-

ये पस मउर पसां हिउ चकट, लीहा बिउ
 हक पसीएे नै ।

पस मउर, पस पटहारी, गमक बिउ हक उगीएे नै ।
 पस ममाम उे पस विधक, मितल बिउ हक
 वगीएे नै ।

धारु मगिध नै मिर मगे, उरगिन हिउ क
 वगीएे नै ॥

(ii)

गम उम :-

धारु नै खरे उमवाडां गरीं अँडा
 पापडी हिउ उँधे उमवाडीमां उे हिमग एी बीडा
 नै, नै आँधरां हिउ नीन सेवां एी मउरडा

हा प्रमाद रिहा नुं मने निम नुं पत्र-मह बे
मतादिर गी गम-रम उडपंतु गेहो नुं, सिहें :-

हाह एनीमा हुंडतु हाके रूडे, एव एव दिरक उंगी नु।
उंडी उंडे उंडे उंडा एी, मरदिमा उमर दिगकी नु।
ममर हे बेडाग ममर नु मरह, पीहट मरकत पारी नु।
घादि निरर उंडे हे घाणु, रूनी गम बगडी नु।
(ममरत घाणु)

(iii) उगडी रम :-

उगडी रम हा मघाएी उाह एीमहमी
पुंम नुं। हसीए हे मर्रेरां हिंघ पुंडु पुंम मघाएी
उाह नुं। एिनां हिंघ पेंहा उेहिमा मनुगग उे हेंगग
मंघारी उाह नुं। एिनां मापनां नुअ हसीए नी एी
वहिडा हिंघ पुंडु पुंम हे मघाएी उाह उें येंहा
उेहिमां उगडी रम एव पेंहा उेहिमां नुं।

“रु मं बेएी मरिउ, पिहें पडडाहमी।
मरिमा हुरेके मारग, नम मंगि नहमी।
नुं विर घाप नु माउ, नु बेएी मीउ रे।
हनीहा एव मग नु बेएि, एं उर चीउ रे।”
(हसीए)

⇒ उा. ममरनीउ मिय नु माधिमा

“हसीए एीमां वहि उरडीमां मरम, मपमर
उे वरही उीधडां वेंघरीमां उर। निगरीमां
वधनी उे वरनी, ममर उे मरीघ, घापडी
उे मरुमा, एव उे एरुडा हुरेके हिंघी
नुंटां उे उडाएि हिंघ मर हिंघ उेपहंम
नां मय उे उे पिमाउ वरिउ वरहाएिही
हिंघी हुरेके मापारतउ नुं हिंघडा हिंघ
एव हेंघीमा उर।”

3. मीडिल रा दिगड में, "कर्मकार कर्मिणी मगीएव जगड में, जिम
 नरु बहिडा ही सुधमरडी हिं हापा जेरा में। हिं मखर रपी
 गहिं जे नो बहिडा नुं मजुपिड अडे हिमरा पुअइ
 हपाडि रा रंम बरु जे।" Page No. 9

4. कर्मकार :-
 कर्मकारां नुं वाहि ही माउमा
 मनिमा गिमा में। ~~कर्म~~ ~~रुप~~ ~~वाहि~~ हीमां बानीमां हिं
 उयमा कतपुाम मदी रुपर वाहि अडे हिमराउ माहि
 कर्मकारां ही धंली हउं बीडी मिजरी में।
 मदीमां ने मापडे हिमरां नुं पनेगी सैदु
 अडे रिडे हिं मघराहरी में ने कर्मकारमदी
 रुप हिं माउहिमबड बीडा में। कर्मकारमदी
 मघराहरी उमां ही वाहि रचका नुं मिगारु
 रा रंम बरु ही उं वाहि रचका नुं
 अरुपुवक ही घटाडिं में।

(ii) कतपुाम कर्मकार :-

"घरीमां धरीमां धरीमां हे
 कमीं मां धरीमां हे सुरा।"
 (मग उमें)
 कर्मकार हे अरुप जे गहिं नो रि वाहि मीदगी हे
 मिगार हा हिं मायत माउर जे। कर्मकार हा
 मीधय वाहि ही धागवनी मजाहट वही हे कर्मकार
 उउमरा अडे उम नरु में। कर्मकार नुं वाहि हा
 नेवरी कर्म मनिमा जारा में विडिरे हिं
 वाहि हिं मीदग उउ हा हापा बरु में।

(iii) उयमा कर्मकार :-

"मीम मज्जर हांग मनिमां गे,
 नेजा पंडु बुराणी गाफे गु।
 या बुराणी धागु बडे, धरे
 पने जा हाफे गु।"
 (मजुअर धागु)

मप्रउत घाव हीमा मुदी रचनादा मरुवाठमही ज्वा
 उमने कापट मुदी हिमागं नै धने दुवडे हंग नाप्र
 मरुवाठ जवउ मधलाहकी हिच पुमउउ वीडा जै।

5) पूरिवती चित्रक :-

वप्रउमव गहां हिच यंसाधी मुदी वाहि दे
 चित्रक ही जै। मेष हरी उ जै पूरिवती
 वहीमा उर पूरिवती हे चित्रगं नै मधला
 गरी हमासिमा गिमा जै। मरुवाठ मधला
 हा सिमडेमात्र वीडा जै। निना हा मधप
 पूरिवती नाप्र जै सिहे => यमु - यंकी वीट पडंगे
 नंगप्र वेउ नहीमा रंभ वेपरा जिगरी
 हामना विंवांग धेनीमा धउ मंडे रंउा
 काहि पूरिवती नाप्र मधपंड गहां। घाहां उ
 हमां दे गहां मिहरे गु।

यंसाधी मुदी वाहि दे मित्रय
 हिपाव हिच पूरिवती चित्रक हा पुंका हवहन मिहला
 जै। मुदीमा वहीमा नै पूरिवती चित्रक हमावा
 मीहाउमा नै रंघी पीउ पाउट ही पुंका हिंती
 जै विंवांग मरुंध पूरिवती ही गौह हिच नमला,
 पकरा मंडे यिनमला जै। हिम झही चित्रक
 हमावा मरुंध मुदी वहीमा महेम मरुवाठ-मुठम
 ममहट हिच ममरंभ जै चारा जै, सिहे :

"सीला नंगप्र विमा उदरि दहि वंडा मरुवाठ।
 हमी वध गिमाप्रीमं नंगप्र विमा उदरि॥"
 (मेष हरी)

"नै हप्र मीठे चहि चहि धाउठि, काउठि वरुसा उमा।
 मरुंधी धाटी धिक्का यंडा, गरी हरीगं हा मीमा।"
 (साव प्रमंत)

3. बर्फा मिथ्या घेरी दे मधरा हिन, प्रेक्षर ही मंत्री में जाँ उम हा भाषा
 में नो माण्डि रुप हिन पुगट उरिमा में। मंत्री हाकडे Date / /
 हिन विसे मण्ड प्रेक्षर ही मधमीमड हा अन्त (धिय) गेरा Page No.

6). मंत्री :-

मन्त्री राटि ही दिक्कतता में वि मन्त्री
 बहीमां के हिनिके रुपकां धियां अडे पुडीकां
 हुकाका महे- मधेपनी मंत्री ही हउते रीडी में।
 हँध - हँध मन्त्री बहीमां हँध - हँध उवां
 महे वुं बुरीए, गीगीए, माए, दूरीए आदि
 मधरां ही हउते रीडी में। मन्त्री राटि
 हिन मधेपनी मंत्री ही मने हयेंगे पुपुन
 में। वही हाक सुमनेउगी मंत्री ही ही
 हउते रीडी गरी में। मन्त्री वही मने
 नुं मधेपन वरने मनेष नुं उपरेम मनेष
 अडे पुपुन हिन उका हनीए, दूरीए अडे
 मण्डाक हाक ही मंत्री नाक मधेपित
 पुपु गहाकिनी ही पुपुडी मन्त्री राटि में
 उरी में। हनीए ही मंत्री में मधराहनी
 उगड धाही अखहा मंड धरका हाक परउध
 टिमही में। माण्ड मण्ड के भाषणी मंत्री गरी
 खरे नुं हउहेमी दे ससधे नाक उरपुव
 वही हनिमा हनीए पाणिकां मन्त्री वही में
 मिमली राटि हिन नाटवी चेउ हिनका
 अडे- मसवनी पुपुन में। धेसव सँकडे उे मधरा
 ही हिनकाहनी वही उहे उक पर उे मनेष
 उपर हिनका वरने उक नरे वि हनीए मधे
 नुं ही नउरे हिरा में अडे मारी मसागिर
 कंममाकुडा उे हगिरउडा हा निमिहार उमे नुं
 ठगिरउडा में

मन्त्री मणी नीं मं वउली वउली उरी।
 कउते दे हिन गेउने कउते जधि हिन गि गरी नदी।
 (माण्ड मनेष)

3) उमा :-

→ पँडेंते कनुमार उमा

“दिसार कते उमा हिं बेंडा जी कतेर
 उं, दिसार कतेमा ही मर नां
 कपतीरप गँडघाड उं पर उं नहे
 पतीरप उंवे घलीमां उंते नार
 उंते उं उं उंमते उमा ही मंगिमा
 हिं उं।”

→ महीट हे कनुमार

“पतीमाउमर मघरां एकाग दिसरां
 ते नार बरका जी उमा उं।”

पँसाधी मूढी वही एमफामी दिसरपाग हे कनुमाही
 उंहे बरहे पँसाधी मूढी बहि हिं कथ-टाकी
 उमा हा पूगह उंहा मउहिर उं। पर मूढी
 वहीमां हा मूढीमउ हे पूगर कते पुमार मही
 पँसाध कउह बारु से बहि पँसाधी मूढी
 बहि हे जिं कउहमा उं, उमरी उंका
 पँसाधी उमा ते मध उंखरे बीडी गही उं।
 हरीए बी सुगउग मारा पँसाध पँमे एम
 बारु उंकां एमा उंकाहां उंपर कतेवां
 उमाहां हा पूगह रेधर ते मिरा उं।
 मउउकी उमा हे किलारा मघर पापउ उंहे
 उं सिंहे :- मउ, उं, विर, वपर,
 हउ, उंहा कउह।

ਮੁਕਤਾਨ ਧਾਰ ਦੁਆਰਾ ਵੱਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
 ਵੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਗੁਮੰਨ ਦੁਆਰਾ ਸੁਤਿਲੀ
 ਤੁਸੀਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਗੁਮੰਨ
 ਨੇ ਸਾਰੀ ਸਪਸ਼ਟ ਬੋਲੀ ਦੇ ਨਾਸ਼ - ਨਾਸ਼ ਮਗਰ
 ਸੁਧਰ ਉੱਠਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਇ
 ਬੇਤਰ ਇੱਥੇ ਨਹੀਂ ਖਿਰਤ ਯਾਈ। ਵੀਰ ਦੀ
 ਤੁਸੀਂ ਸਰਬ ਸਾਂਝੀ ਸੀ। ਵੀਰ ਦੀ ਵਿਗਾਧਾ
 ਉੱਥੇ ਧਰਤ ਸਾਰੇ ਪਰਮਾਂ ਤੇ ਇਸ਼ੀਰਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ
 ਸੀ। ਪਰਯਾਤ ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਕਤੇ ਤਿਈ ਹੈ।
 ਕੁਝ ਸਕੋਰ ਕਮਿਓ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ਜੋ ਠੇਕ ਕਤੇ
 ਸੁੱਧ ਪੰਜਾਬੀ ਹਨ ਜਿਥੇ :-

“ਦੇਰਤਾ ਸਾਣ ਨ ਕਰੀਏ, ਤੁਰੀਏ ਕਾਰੋ।
 ਕੋਤੀ ਭਰ ਭਰ ਗਈ ਸਮੁੰਦਰ ਮਾਗਰੋ।”

ਵੀਰ ਦੀ ਕਾਇ - ਰਚਨਾ - ਇੱਥੇ ਇਸ਼ਕਾਮੀ ਵਿਗਾਧਾ
 ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪ੍ਰਭਾਵ ਉਜਾਗਰ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਉੱਥੇ
 ਕਰਬੀ - ਫਾਰਮੀ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।
 ਸਾਰੇ ਸਰਬ ਨੇ ਵੱਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਤੁਸੀਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
 ਵੀਤੀ ਹੈ। ਗੁਜਰਾਤ ਵੀਰ ਨੇ ਕਾਪਟੇ ਵਿਗਾਧਾਂ ਨੂੰ
 ਮੁਕਤਾਨੀ ਕਰਬੀ ਫਾਰਮੀ ਗਰੀ ਪ੍ਰਮਤਤ ਕੀਤਾ ਹੈ।

8). ਕਥਾਵਾਂ, ਮੁਗਠੇ :-

⇒ ਡਾ. ਜਗੀਰ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਕਨੁਮਾਰ,

“ਉਪ ਰਚਨਾ ਦੀ ਇਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਖੋਰ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ
 ਕਨੁਮਾਰਾਂ ਵਰਗਾ ਇੱਥੇ ਵੀਤਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ,
 ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਇੱਥੇ ਖੋਰ ਗੀਤਾਂ, ਖੋਰ ਕਹਾਣੀਆਂ
 ਕਨੁਮਾਰਾਂ ਵੰਗੀਆਂ, ਵਿਭਿੰਨ ਖੋਰ ਕਥਾਵਾਂ
 ਖੋਰ ਸਿਨਾਹੁਆਂ, ਖੋਰ ਬੁਝਾਰਤਾਂ, ਮੁਗਠੇ

3. 'मेरे कंधाएँ धूम्र रूप हैं का
साँदें उन।"

पंचाघी मुंदी बाहिए उचकाहं हिच वृद्ध कनिगीकां
उवां उक, जे पंचाघी उमा हिं प्रेवां हमाग
मगहरे कते कंधाहं हे उर उे हउडीकां
साँदीकां उन। वपाउमव पंथां उे कनी उँलर
ली बाहिए उचका हिं मंगीउर मँग उम कते
कंधाह मगहरेलर मधराहली काहिए गृह उका

"बाह - बाणीका विंडीकां मेरुडीकां ने घेके,
उँदीकां हँक हसँदीकां ने।"
(कनी उँलर)

9). मधराहली :-

⇒ तागेम उँलर कतमार

"मधीय कते कतव हा हँक मधीप
गी मवडी हँ, भिगडी कतव
हा गिमान ववहाउँली हँ।"

पंचाघी मुंदी वहीकां ली हिमेमउा उ वि उे वहेक
कतघी दारमी मधराहली उँलर मीमिउ नगी
गहिं मगें मधराहली मजउली, पंचाघी, उँली
कते 'मंसिउ काहिए मधराहली मसुंघी मुंदी बाहिए
उचका हिं विपरे ही हँकउा हा पुउाह नगी
मिउतली मगें हिम ने उप्रगउे उे वे मधमांधी मुंदी
बाहिए मधराहली हसे उँलर गृहि वरवे पंचाघी मुंदी
बाहिए ने हसरे बाहिए-ग्यां मधराहली कते विमां
बाहिए तागे हिं कतउा हँ पारकी घहाहिका उँ,

ਜਿਹੇ : ਟਰਵੇਸੀ , ਸੂਰ , ਖੋਲਿਯਾਜਾ , ਖਾਰ , ਟਾਕੀ ,
 ਗਨੀਮਤ , ਅਜਾਫ , ਗੋਲਾ , ਗਾਫ਼ਲ , ਤੇਧਾ , ਗੋਰਿ ,
 ਟਕੀਰ , ਸੇਖ , ਲਤੀਫ , ਖੁਲਾਇ , ਗਿਰੀਯਾਜ , ਟੁਪਲ ,
 ਖਾਤਕ , ਲਿਖਾਇਤ , ਗਟਾਰ , ਤਮਥੀ , ਅਤੇ ਸਮਝਤ
 ਆਇ ।

(i) ਸੁਫ਼ਤਾਨੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ :- ਸੱਤ , ਤੁੱਤ , ਕਪਰ , ਗਾਫ਼ਜੀ
 ਟਤ , ਕੰਧੀ , ਜਾਮੀ , ਤੋਮੀ , ਤਿਰ
 ਕਸੂਰੀ , ਕੇਵਲ , ਆਪਣੇ , ਟਿਕਾਰਤ
 ਜਟਿਕਾਈ ਆਇ

(ii) ਲਾਜਿਦੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ :- ਤੁੱਤ , ਤੁੱਤੀ , ਸ਼ੇਖਾ , ਸਿਖਰੀ
 ਕਰੇਲ , ਕਰੇਲੀ , ਟਾਇਲ , ਕੁਕੇਲੀ ਆਇ

(iii) ਅਰਥੀ - ਟਾਰਮੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ :- ਅਜ਼ਦ , ਅਜ਼ਲ , ਅਜ਼ਦ
 ਕਈ , ਖਿਮਮਿਯਾ , ਸੁਕਾਫਰ , ਸਫ਼ਾ
 ਤਮਥੀ , ਆਖਿਯਾਤ , ਰੁਮਨਾਈ
 ਗੋਲਾ , ਸ਼ਬਦਮ , ਸੀਰ ਖੁਆਰੀ ,
 ਕੁਰਬ , ਸੁਕਰ , ਤਰਫ , ਟਕਾਫ ,
 ਜਾਹਰ ਆਇ ।

(iv) ਤਿਲੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ :- ਤਕ , ਮਕ , ਟੁੱਠਾ , ਸੰਗ , ਤੇਲਾ
 ਕੋਲਾ , ਪੀਕ , ਖਾਇਕ , ਕਾਗ
 ਪਠਕਿ , ਪਠੇਤਾਉ , ਰੇਖਾ , ਅਤੇ
 ਖੋਇ ਆਇ ।

⇒ ਨਿਬੰਧ :-

ਪ੍ਰਿਯੋਕਤ ਵਿਚਾਰ ਚਰਚਾ ਅਤੇ
 ਪ੍ਰਿਯੋਕਤਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਅਸੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ
 ਹਾਂ ਕਿ ਪ੍ਰਿਯੋਕਤੀ ਸੂਰੀ ਕਾਹਿ ਕਠਾਤਮਕ
 ਗੁਣਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਗਫ਼ਲ ਕਾਹਿ ਹੈ ।

ਜੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਹਾਨ ਵਿਚਾਰ ਤੇ ਦੰਗਾਂ ਨਾਲ ਉਪਲੱਬਧ
 ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਿਆ।
 ਸਾਰੇ ਸੁਫੀ ਕਵੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਮਹਾਨ ਮੰਥਪ ਤੇ
 ਮਹੱਤਵ ਮੌਜੂਦਾ ਹੀ ਦਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਮਮਰਾਜੀ
 ਮਮਾਜ ਵਿੱਚ ਪੁਰਖਿਤ ਦੁਮਤਾਂ / ਦੁਮਤਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਵਿੱਥ
 ਪ੍ਰਤੀਕ ਸੇ ਕੇ ਸੁੱਖਤਾ ਨੂੰ ਮਮਰਾਜਿਟ ਸੁਈ ਕਾਇ
 ਰਚਨਾ ਸਿਰਜੀ ਗਈ ਹੈ। ਹਰ ਕਵੀ ਕਾਇ ਕਾਇ
 ਪੱਖ ਹੀ ਕਮੋਈ ਤੇ ਖਰ ਉਤਰਾ ਹੈ।